International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 151-154

शिक्षक और शिक्षक दिवस की प्रासंगिकता

प्रो. बनवारी लाल जैन*

सार

शिक्षक, शिक्षा द्वारा कल्याण करने वाला होता है। शिक्षक अपने ज्ञान, अनुभव तथा कौशल से छात्रों को ज्ञानी बनाने का प्रयास करता है। छात्र भी अपने शिक्षक के गुणों को सीखने का प्रयास करता है। शिक्षक के सम्मान में विद्यार्थियों का सम्मान छुपा हुआ है। सम्मान से नम्रता, विनम्रता और सौहार्द्र झलकता है। हम छोटे से लेकर बड़े व्यक्ति का सम्मान करना सीखते हैं, ऐसी परंपरा से तनावमुक्त एवं वातावरण पवित्र होता है, मित्रता का वातावरण पैदा होता है, निर्मलता का मार्ग मिलता हैद्य कहते हैं ***"गुरु बिन ज्ञान कहाँ"****। वह अपने शिष्य को अपनी प्रतिकृति और अपने प्रतिबिंब में बनाता है। भीतर की शक्ति के प्रशिक्षण का माध्यम गुरु ही है। शिक्षक एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व है, वह अपने अंतरण से शिष्य को उसी प्रकार आलोकित करता है, जैसे–* ***एक दीपक दूसरे दीपक को आलोकित करता है****। इसी कारण प्रजातांत्रिक एवं बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षक का स्थान प्रतिष्ठा का पद है। इसी भाव को ध्यान में रखकर यह आलेख लिखा गया है।*

शब्दकोश : *शिक्षक, ज्ञानी, विद्या, आदर्श स्वरूप, प्रतिरोधात्मक शक्ति।*

प्रस्तावना

"गुरु को कीजै दंडवत कोटि कोटि परनाम।
कीट न जाने भृंग को, गुरु कर ले आप समान ।।
कोटिन चन्दा उगही, सूरज कोटि हजार।
तिमिर तौ नाशै नहीं, बिन गुरु घोर अंधार।।
गुरु शरणागति छाडि के, करै भरोसा और ।
सुख सम्पति की कह चली, नहीं नरक में ठौर ।।
जल परमाने माछली, कुल परमाने शुद्धि ।
जाको जैसा गुरु मिला, ताको तैसी बुद्धि ।।

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर,1888 को तिरुटनी में हुआ। शिक्षा (1906–1908), लंदन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय पूर्व देशीय व नीति शास्त्र के प्रोफेसर (1936–1939), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में कुलपति रहे (1939 –1948), भारत के राजदूत रहे (1949–1962), उपराष्ट्रपति (1962), राष्ट्रपति (1962–1967) और 1962 में

* विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, नागौर, राजस्थान।

भारत रत्न से सम्मानित हुए। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शिक्षक दिवस पर दिया गया संदेश इस प्रकार है– **"प्रभावशाली शिक्षक बनने के लिए स्वयं शिक्षार्थी बने रहना अत्यंत आवश्यक है। सीखने की प्रवृत्ति रुक गई तो अच्छा शिक्षक बने रहना संभव नहीं है। आज हमारी नैतिक मूल्यों में आस्था नहीं रही, जिसके कारण अराजकता बढ़ती जा रही है। शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों के समक्ष अपना अच्छा आदर्श उपस्थित करें। विचार, आचार और प्रचार सब सम्यक सहगामी हो। हमें आत्मनिरीक्षण करते रहना है और अनुशासित रहना है। हमारी निष्ठा देश के प्रति होनी चाहिए, न किसी जाति अथवा संप्रदाय विशेष के प्रति। हमें भावात्मक एकता की ओर बढ़ना है। नेक कार्य से हमारे युवकों और बालकों में सही प्रवृत्तियों का विकास किया जाए तो हमारे राष्ट्र का भविष्य उज्जवल होगा और यह दायित्व है आपका, शिक्षकों का।"**

आराधना

इस दिन शिक्षकों की मान, सम्मान, आदर व प्रतिष्ठा के साथ आराधना की जाती है। कुछ छात्रों द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों का बहुमान भी किया जाता है। शिक्षकों के सम्मान में तिलक लगाकर, नारियल प्रदान कर या श्रीफल देकर तथा मुंह मीठा करके सम्मानित करते हैं। स्नेह भरी आंखों से, हाथ जोड़कर, पैर छूकर आदि विविध प्रकार से शिक्षक का सम्मान करते हैं। शिक्षक अपने पावन हाथों से तथा श्रद्धा भाव से अपने शिष्य को शुभकामना, मंगलभावना एवं शुभाशीष प्रदान करते हैं। गुरु एवं शिष्य का मधुर संबंध तथा श्रद्धा भाव से ओतप्रोत होने का शुभ अवसर प्राप्त होता है। हम अपने अध्यात्म को कैसे समझें? मन को कैसे समझें? यह गुरु के द्वारा ही बताया जाता है।

आचरण की शिक्षा

स्वयं के आचरण के द्वारा शिक्षक शिक्षा देने के कारण आचार्य कहलाया। आचार्य के लिए पहले आचरण की शिक्षा, बाद में उपदेश देने की शिक्षा का विधान है। इनके समीप होने पर शिष्य ज्ञान बढ़ा सकता है। प्राचीन शिक्षक के समक्ष सम्राट भी अपना सिंहासन छोड़ कर खड़े हो जाते थे। शिक्षा एक व्यक्ति नहीं एक पद एवं संस्था है।

विद्या, वाणी, वस्त्र और विनय का भाव

पंडित मदन मोहन मालवीय ने कहा कि जिस शिक्षक के पास विद्या, वाणी, वस्त्र और विनय का भाव हो, उस शिक्षक का सब सम्मान करते हैं। शिक्षक को अध्ययन में नवीनतम ज्ञान से परिचित होना और सदा तैयारी करके कक्षा में जाना चाहिए। स्वयं शिक्षक के विद्वान होने से कुछ नहीं होता है, वे अपने शिष्य को भी निपुण और कौशल युक्त बनावें।

उज्ज्वल आभामंडल

हजारों पुस्तकों को पढ़ने से ज्ञान, संस्कार व मूल्य नहीं आ सकते हैं, वे चीजें तो शिक्षक के संपर्क में रहकर ही प्राप्त की जा सकती है। शिक्षक ही विद्यार्थियों का सर्वागीण विकास कर सकता है। शिक्षक उज्ज्वल आभामंडल तथा मंगल मार्गदर्शन से शिष्य को अग्रेषित करता है। जो सब के साथ तालमेल बैठाकर चलता है, जो छोटों और बड़ों में समानता कर चलता है।

ज्ञानी

अंधकार तभी तक रहता है, जब तक कि सूर्य का प्रकाश न हो, अज्ञान तभी तक रहता है जब तक कि ज्ञान न हो। अज्ञान आदमी को अंधा बना देता है। क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए? क्या हितकर है, क्या अहितकर है? इसका विवेक उसे नहीं रहता।

आदर्श स्वरूप

चरित्रहीनता एक महामारी है। वर्तमान समाज के युवा वर्ग में फैल रही चरित्रहीनता को शिक्षक ही रोक सकता है। यह चरित्रहीनता टी.वी, इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल आदि के माध्यम से तेजी से फैल रही है। शिक्षक उसे अपना आदर्श स्वरूप पेश करके बाहर कर सकता है।

अनुशासन और प्रतिरोधात्मक शक्ति

जो अपने पर अनुशासन और प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास कर लेता है। वह आत्मविश्वास का धनी, महत्वाकांक्षी रहित होता है। आज देश को आध्यात्मिक तथा नैतिक दृष्टि से उठाना है तो शिक्षक ही उसे उठा सकता है। शिक्षक ही विद्यार्थियों को आध्यात्मिक तथा नैतिक प्रशिक्षण दे सकता है। शिक्षक के गुणों एवं कार्यशैली से ही देश ऊँचा उठ सकता है। शिक्षक दिवस चिंतन पैदा करने वाला दिवस है। मां सबसे बड़ी शिक्षक है, उसे हमें वंदना करनी चाहिए।

सांस्कृतिक व सामाजिक संरक्षणकर्ता

सांस्कृतिक व सामाजिक प्रदूषण फैल रहा है, उसे शिक्षक ही बचा सकता है। शिक्षक सेवा के स्थान पर व्यवसायी बन गया है, हम माल बेचने वाले व्यापारी बनकर न रह जाय । शिक्षक की योग्यता, क्षमता, कार्यशैली में गिरावट आई है। बिना आस्था एवं श्रम के लोग शिक्षक बन रहे हैं। शिक्षक की सकारात्मक भूमिका कम हुई है, नकारात्मक भावना अधिक बढ़ी है। शिक्षक ही समाज व संस्कृति को बचा सकता है। शिक्षक जब इस पद पर नहीं था, उस समय उसके मन में अनेक कार्य करने की आशा एवं उल्लास था, लेकिन अब वह समाप्त होती जा रही है। आज समाज की अनेक समस्याएं शिक्षक ही सुधार सकता है। अधिकांश शिक्षक सूचना देते हैं, किसी किताब में लिखी बात बोलते हैं, ज्ञान नहीं देते हैं, भाव नहीं देते हैं, जिन साम्रग्री/नोट्स से शिक्षक पढ़ाते हैं उससे गहरी समझ विकसित नहीं हो पाती है। इस प्रक्रिया से तनख्वाह के साथ हरामखोरी बढ़ रही हैं। शिक्षक **'टीच लैस लर्न मोर'** के सिद्धांत पर शिक्षण कराएं, प्राण प्रण से शिक्षा दें। आज के गुरुओं से हमें बहुत कुछ प्रेरणा मिल सकती है, यदि वह सच्चाई, ईमानदारी एवं मेहनत के साथ पढ़ाते हैं तो। **'तस्मै श्री गुरुवे नमः'** स्वयं को शिक्षक मानता है, वह पूरी जिंदगी शिक्षा ग्रहण करता है। शिष्य के लिए तपने का संकल्प लेता है, अपना ज्ञान उसमें स्थापित करता है। एक किसान बीज खरीदता है, उतना पैसा एक शिक्षक को कम से कम पुस्तक खरीदने में करना चाहिए। नवीन किताबों को पढ़ना चाहिए, वह संकल्प के साथ जिए। बीज भंडार में बीज सुरक्षित रह सकता है, किन्तु पेड़ नहीं बन सकता है, इसलिए उसे जमीन में गढ़ना पड़ेगा। चेतना पीछे छूटती जा रही है, सरस्वती का साथ छूट रहा है। शिक्षक विषय की नवीनता, रोचकता तथा अपूर्व स्वरूप बनाए रखता है। शिक्षा दिव्यता के मार्ग पर ले जाती है लेकिन हम राक्षसी मार्ग पर जा रहे है। वह छात्र में गुठली बने और समाज को आम प्रदान करें। आज की शिक्षा पेट पालने के लिए ठीक है लेकिन मानव निर्माण के लिए नहीं। अध्यापक अपने जीवन के उदाहरणों से भी विषय का विस्तार दे सकता है। जब तक अध्यापक छात्र के जीवन से नहीं जुड़ेगा, तब तक शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं। ज्ञान पैदा नहीं किया जाता है, यह तो जन्म के साथ आता है। अज्ञान की प्रकृति के कारण, आवरण के कारण ढका रहता है। जिसे हटाने की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। आज शिक्षा से शरीर और बुद्धि का पोषण हो रहा है। मन और आत्मा सूख रहे हैं। आज की शिक्षा असंतुलित व्यक्तित्व का निर्माण कर रही है। जितनी शिक्षा, उतना असंतुलन हो रहा है। शिक्षक और छात्र दोनों मान रहे है कि शिक्षा का सत्यानाश हो रहा है।

निष्कर्ष

शिक्षक दिवस के दिन संस्कारित बालक शिक्षक से आशीर्वाद लेता है, शुभकामनाएं मांगता है। गुरु भी पवित्र मन से आशीष प्रदान करता है। गुरु व शिष्य के संबंध प्रगाढ़ होते है। जीवनभर उनको याद करते है। कक्षा–कक्ष में सीखे पाथेय सदैव मार्ग प्रशस्त की ओर अग्रसर करते हैं। शिक्षक जीवन जीने, जीवन शैली, जीवन मूल्य व जीवन विज्ञान की शिक्षा से संपोषित करता है। कक्षा–कक्ष उसकी सदैव याद दिलाता है। उसके व्यवहार, वार्ता, विचार सोच व चिन्तन से शिष्य को आलोकित करता है। शिक्षक की पढाई से बड़े अधिकारी बने, पदों को प्राप्त किया, यह सब एक शिक्षक के गुणों का ही विकास हुआ है। शिक्षक दिवस मनाने की प्रेरणा भी एक शिक्षक से प्राप्त हुई है। शिष्य की हर परेशानी, समस्या तथा कठिनाई का समाधान करता है। आज मोबाइल पर, वाट्सअप पर, ईमेल पर शुभकामना प्रकट करते है। वह अपना सम्मान और आदर पाकर खुशी महसूस करता है। सच्चा शिक्षक वह है जो अपने शिष्य की कमजोरियों को, अनुशासनहीनता को, मूल्यविहीनता को खत्म करता है और सदैव सद्गुणों का संवर्धन करता है। वह प्रत्येक क्षेत्र में अपने ज्ञान को संपुष्ट करने का प्रयास करता है। सेवानिवृत्त के बाद ही उसको कार्य करने का और अधिक अवसर मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी, रोली (2018), ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
2. आचार्य तुलसी. (2008) शिक्षा को बनाएं विकास और आनन्द की दीक्षा. पवन प्रिंटर्स,नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 पेज न.142 व 145
3. आचार्य महाप्रज्ञ .(2008).जीवन विज्ञान शिक्षा के नये आयाम. कला भारती, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 पेज न.113
4. सिंह, कर्ण (2008). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध. गोविन्द प्रकाशन लखीमपुर–खीरी
5. पुरोहित, जगदीश नारायण (2007) शिक्षण के लिए आयोजन . राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
6. कथूरिया, आर.पी. एवं दवे रमेश (2005). शिक्षण प्रतिमान. मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी, भोपाल

❖◆❖